पाठ्यचर्या विकास की प्रक्रिया के सोपान

Steps in the process of curriculum development in Hindi

पाठ्यचर्या निर्माण की प्रक्रिया एक विशेष प्रक्रिया है इसके अन्तर्गत अधिगम अनुभवों तथा पाठ्यचर्या के क्रिया कलापों के द्वारा लाए जाने वाले परिवर्तनों के मूल्यांकन की साफ़ समझ होनी आवश्यक है। शिक्षा एक सामाजिक प्रक्रिया है इसलिए सामाजिक भिन्नता को ध्यान में रखकर पाठ्यचर्या का स्वरूप विकसित किया जाता है। पाठ्यचर्या के मूल तत्वों के आपसी सम्बन्ध के स्वरूप में विविधता होती है। परन्तु इस मूल तत्वों – उद्देश्यों, पाठ्यवस्तु, शिक्षण विधियां तथा मूल्यांकन के सम्बन्ध के विशिष्ट स्वरूप के आधार पर पाठ्यक्रम का निर्माण किया जा सकता है।

पाठ्यचर्या विकास की प्रक्रिया के सोपान

1. शैक्षिक आवश्यकताओं की पहचान
2. शैक्षिक उद्देश्यों का निर्धारण
3. विषय वस्तु का चयन एवं संगठन
4. अधिगम अनुभवों का चयन एवं संगठन
5. मूल्यांकन

1. शैक्षिक आवश्यकताओं की पहचान

पाठ्यचर्या तभी उत्तम कहलाती है, जब यह समाज के व्यक्तियों के अनुरूप तैयार की जाए। साथ ही साथ पाठ्यचर्या के द्वारा तय किए जाने वाले महत्वपूर्ण सोपानों में से एक है, "आवश्यकताओं का निर्धारण करना"। इन आवश्यकताओं को दो प्रकार से निर्धारित किया जा सकता है।

- सर्वप्रथम एक सर्वेक्षण के द्वारा
- उपलब्ध आंकड़ों के विश्लेषण के द्वारा।

2. शैक्षिक उद्देश्यों का निर्धारण

शिक्षा तथा पाठ्यचर्या निर्माण के उद्देश्य एक ही होते हैं। उद्देश्यों के प्रतिपादन में कई स्रोतों का उपयोग किया जाता है। इसके प्रमुख स्रोत इस प्रकार हैं-

- परिस्थिति विश्लेषण के आंतरिक तथा बाह्य घटकों की पहचान।
- शिक्षा दार्शनिक, सामाजिक, आर्थिक तथा राजनीतिक आधार।
- छात्रों के विकास की अवस्थाओं की आवश्यकता।
- राष्ट्र के भावी नागरिकों के कौशल एवं क्षमताओं का स्वरूप।

शिक्षा के उद्देश्यों का वर्गीकरण

हम यहां पर उद्देश्यों का वर्गीकरण निम्न आधार कर पाते हैं

1. ज्ञानात्मक
2. भावात्मक
3. क्रियात्मक
4. सामाजिक
5. शारीरिक

पाठ्यक्रम का प्रारूप विशिष्ट होता है जिसका निर्माण विशेष स्तर के छात्रों के लिए विशिष्ट सामाजिक संदर्भ के लिए किया जाता है। इसके लिए यह आवश्यक होता है कि इन उद्देश्यों का चयन करके व्यवहारिक रूप में लिखा जाए जिसे विशिष्ट उद्देश्य कहते हैं।

- शैक्षिक उद्देश्यों का निर्धारण कर पाठ्यचर्या मुख्यता निम्नलिखित तत्वों पर आधारित करके बनाई जाती है-

1. मिलना
2. उत्कर्ष या योग्यता

3. कथन या अभिव्यक्ति
4. उपयुक्तता
5. तार्किक वर्गीकरण
6. पुनरीक्षण व पुनर्विचार

3. विषय वस्तु का चयन एवं संगठन

पाठ्य वस्तु की व्यवस्था एवं अर्थापन ज्ञान, कौशल, अभिवृति तथा मूल्यों के रूप में किया जाता है। इसकी व्यवस्था विद्यायल में पाठ्यचर्या के आधार पर की जाती है।

विषय वस्तु के चयन हेतु मापदण्ड

1. **आत्मनिर्भरता** – शिक्षण हेतु विषय वस्तु खुद में सम्पूर्ण या आत्मनिर्भर होनी आवश्यक है। शिक्षक छात्र दोनों को ही विषय वस्तु के अतिरिक्त कोई और संदर्भ की आवश्यकता न हो।
2. **महत्व** – विषय वस्तु मूल्य विचारों, संकल्पनाओं व अधिगम विशेषताओं में योगदान देने वाली हो। पाठ्यचर्या समाज के लिए महत्वपूर्ण भी हो।
3. **वैधता** – विषय वस्तु शुद्ध तथा स्पष्ट स्वरूप की होनी चाहिए। भ्रामक तथा अशुद्ध न हो।
4. **रुचि** – विषय वस्तु बच्चों द्वारा रुचि लेने वाला हो ना की अरुचि पूर्ण हो।
5. **उपयोगिता** – विषय वस्तु की उपयोगिता हो वह वास्तविक जीवन में उपयोग आने वाला हो।
6. **अधिगम्यता** – विषय वस्तु में यह भी आवश्यक रूप से ध्यान देने योग्य बात है कि विषय वस्तु सीखने में कितनी सरल तथा कितनी कठिन है।

विषय वस्तु का संगठन

विषय वस्तु के चयन के पश्चात् उनका संगठन करना अति आवश्यक होता है। पाठ्यचर्या मुख्यतः अधिगम की ही योजना होती है। इसके अंतर्गत विषय वस्तु को तर्कसंगत प्रकार से सुव्यवस्थित किया जाता है, ताकि शैक्षिक उद्देश्यों को प्राप्त किया जा सके। पाठ्यचर्या एक जटिल प्रक्रिया है। इसके लिए शिक्षण अधिगम प्रक्रियाओं की पूर्ण समझ होना अति अनिवार्य है पाठ्यचर्या में सम्मिलित विषय वस्तु में क्रमबद्धता, निरंतरता व एकीकरण का अभाव पाठ्यचर्या की मुख्य समस्या है।

1. **क्रमबद्धता** – पाठ्यचर्या के अन्तर्गत क्रमबद्धता का तात्पर्य विषय वस्तु तथा सामग्री को एक निश्चित क्रम में लिखा जाना है। इसमें कुछ निश्चित क्रम को निम्नलिखत प्रकार से लिखा जाता है-

- ज्ञात से अज्ञात की ओर
- सरल से जटिल की ओर
- मूर्त से अमूर्त की ओर

विषय वस्तु का चयन प्रायः काल या ऐतिहासिक विकास के आधार पर भी किया जाता है, जैसे – प्राचीनकाल, मध्यकाल, आधुनिककाल आदि।

2. **निरंतरता** – इसके अन्तर्गत पूर्व अध्ययन सामग्री की तुलना में बाद की सामग्री ज्यादा जटिल हो व छात्रों को अहम तथा व्यापक विचारों का प्रयोग करने के अवसर प्रदान लिए जाने चाहिए। इस तरह प्राप्त किया संचयी अधिगम, चिंतन अभिव्यक्तियों व कौशलों से सम्बंधित हो सकता है। पाठ्यचर्या की विषय वस्तु के द्वारा अधिगम की निरंतरता बनी रहती है।
3. **एकीकरण** – एक क्षेत्र के तथ्यों तथा सिद्धांतों को दूसरे क्षेत्र के तथ्यों व सिद्धान्तों से सम्बंधित किया जा सके अर्थात पाठ्यचर्या ऐसी होनी चाहिए कि छात्रों को लक्षित छात्र समूह के अन्तर्गत पढ़ाए जाने वाले विभिन्न विषयों में सम्बन्ध स्थापित कर एकीकृत करने के प्रयत्न किए जा सकते हैं। जैसे – कि सामाजिक विज्ञान में भूगोल, इतिहास व नागरिक शास्त्र को मिलाया जाता है।

4. अधिगम अनुभवों का चयन एवं संगठन

किसी भी अधिगम अनुभव को निम्न प्रकार से समझा जा सकता है-

- शिक्षण अधिगम प्रक्रिया को सुगम बनाने हेतु आयोजित किए जाने वाले क्रियाकलाप।
- प्रयोग की जाने वाली शिक्षण विधियां।
- शिक्षण अधिगम प्रक्रिया को पूर्ण निर्देशित करना आदि।

कुछ विधियां जो मुख्य हैं- व्याख्यान, परिचर्या, परियोजना, निर्देशन विधि इत्यादि। अन्य अनेक क्रिया कलापों द्वारा भी शिक्षण प्रदान किए जाते हैं, जैसे – फिल्म, प्रयोग के द्वारा क्षेत्र पर्यटन अथवा नोट लेना इत्यादि।

कुछ प्रश्नों के उत्तर पाने के बाद ही शिक्षण विधियों का चयन किया जाना चाहिए। ये प्रश्न कुछ इस प्रकार हैं-

- क्या अधिगम अनुभव पाठ्यचर्या के सामान्य और विशेष उद्देश्यों की प्राप्ति में सहायक है?
- क्या ये छात्रों के लिए अभिप्रेरित है या नहीं?

- क्या ये छात्रों को नए अनुभव प्राप्त करने के लिए खुलेपन और विविधता के प्रति सहनशीलता प्रदान करते हैं?
- क्या ये छात्रों को अपनी आवश्यकताओं और रुचियों को व्यक्त करने योग्य बनाते हैं?

5. मूल्यांकन

इसके अन्तर्गत छात्रों की उपलब्धियों तथा व्यवहार परिवर्तन का मूल्यांकन किया जाता है जिससे अधिगम परिस्थितियों तथा अवसरों की प्रभावशीलता का बोध होता है। पाठ्यचर्या के स्वरूप की उपयुक्तता कोई भी जांच होती है। विद्यालय के वातावरण एवं शैक्षिक क्रियाओं की प्रभावशीलता एवं सार्थकता का बोध होता है। इससे अधिगम अवसरों के सुधार के लिए दिशा भी मिलती है।

इस प्रकार पाठ्यचर्या विकास की प्रक्रिया सम्पूर्ण पांच सोपानों से हो कर गुजरती है।

शिक्षक शिक्षण महत्वपूर्ण लिंक

- संचयी अभिलेख (cumulative record)- अर्थ, परिभाषा, आवश्यकता और महत्व, उद्देश्य, विशेषताएँ, उपयोग, लाभ, सीमाएं (हानी)
- Cumulative record- meaning and definition, importance/need and purpose, uses-advantages-disadvantages
- अभिलेख- अभिलेखों की आवश्यकता , अभिलेखों के प्रकार , अभिलेखों का रखरखाव , निष्कर्ष
- पंजिका- पंजिका की आवश्यकता , पंजिका के प्रकार , पंजिका का रखरखाव , निष्कर्ष
- परीक्षा फल के बारे में जानकारी (Information about Report card)
- उपस्थिति पंजिका तथा उनके प्रकार (Attendance register and their types)
- सम्प्रेषण (Communication)- सम्प्रेषण की प्रकृति एवं विशेषताएँ, सम्प्रेषण की प्रक्रिया, सम्प्रेषण के प्रकार
- ब्लूम के शैक्षिक उद्देश्य का वर्गीकरण (Bloom's Classification of objectives) ब्लूम टेक्सोनॉमी (bloom's taxonomy in Hindi)
- अभिभावक शिक्षक संघ (Parent Teacher Association in hindi -PTA)- कार्य, आवश्यकता, लाभ, उद्देश्य, शिक्षक तथा अभिभावक की भूमिका
- अभिभावक शिक्षक संघ (PTA meeting in hindi)
- विद्यालय प्रार्थना सभा (School Assembly)
- What is SCHOOL REGISTER
- PARENT TEACHER ASSOCIATION | What is PARENT TEACHER ASSOCIATION

- What Is School Records | What Is Records
- संस्कृति और शिक्षा में सम्बन्ध (Relation Between Culture and Education in Hindi)
- शिक्षा और सामाजिक गतिशीलता (Education and Social Mobility in hindi)
- शिक्षण की योजना विधि का वर्णन | शिक्षण की योजना पद्धति के आधारभूत सिद्धान्तो एवं गुण-दोषों का वर्णन
- समाज और शिक्षा में क्या सम्बन्ध (Relation between Society and Education in Hindi)
- वर्तमान पाठ्यक्रम के दोष | वर्तमान शिक्षा प्रणाली के दोष (Demerits of Present Curriculum)
- पाठ्य-पुस्तकों के प्रकार | पाठ्य-पुस्तक का अर्थ | अच्छी पाठ्य-पुस्तक की विशेषताएँ (Meaning of Text-Book in Hindi | Types of Text-Books in Hindi | Main Characteristics Of A Good Text-Book in Hindi)
- अच्छे शिक्षण की विशेषतायें | Characteristics of good teaching in Hindi
- शिक्षण के प्रमुख कार्य क्या क्या है | Major teaching tasks (works) in Hindi
- प्रभावशाली शिक्षण में शिक्षकों की भूमिका | Role of Teachers in Teaching Learners in Hindi
- सीखने क्या है? | सीखने की विशेषताएं | what is learning in Hindi | characteristics of learning in Hindi
- पाठ्य पुस्तकों की आवश्यकता | पाठ्य पुस्तकों का महत्त्व | Need And Importance Of Text-Books in Hindi
- पाठ्यचर्या विकास की प्रक्रिया के सोपान | steps in the process of curriculum development in Hindi
- अधिगम की प्रकृति क्या है? | अधिगम की सम्पूर्ण प्रकृति का वर्णन | What is the nature of learning in Hindi? | Description of the entire nature of learning in Hindi
- राष्ट्रीय पाठ्यक्रम का निष्कर्ष (स्वरूप) | National Curriculum Framework summery NCF, 2005
- शिक्षण का अर्थ एवं परिभाषा | शिक्षण की प्रकृति | Meaning and definition of teaching in Hindi | Nature of teaching in Hindi
- सीखने को प्रभावित करने वाले कारक क्या क्या हैं? | Factors affecting learning in Hindi
- बुनियादी शिक्षण प्रतिमान क्या है? | बुनियादी शिक्षण प्रतिमान की विशेषतायें | What is the basic learning model in Hindi? | Characteristics of the basic learning model in hindi
- पाठ्यचर्या के प्रकार | various types of curriculum in Hindi
- पाठ्यचर्या उपागम | Curriculum approach in Hindi
- पुस्तक चयन के आधार बिंदु | Book Selection Points in Hindi
- पाठ्यक्रम निर्माण के सिद्धान्त | Principles of Curriculum Construction in Hindi
- थार्नडाइक का प्रयास एवं त्रुटि-सिद्धान्त | थार्नडाइक के प्रयास एवं त्रुटि-सिद्धान्त के गुण-दोष
- प्रयास एवं त्रुटि सिद्धान्त के शैक्षिक निहितार्थ | उद्दीपन अनुक्रिया सिद्धान्त के शैक्षिक निहितार्थ
- अधिगम के नियमों का वर्णन | इ० एल० थार्नडाइक के नियमों का वर्णन
- कोहलर का सूझ एवं अन्तर्दृष्टि सिद्धान्त | गेस्टाल्ट का सिद्धान्त
- बन्दुरा एवं वाल्टर्स का सामाजिक अधिगम सिद्धान्त | अल्बर्ट बंडूरा का सामाजिक अधिगम सिद्धान्त | सामाजिक अधिगम सिद्धान्त
- कोहलर के सूझ एवं अन्तर्दृष्टि सिद्धान्त के शैक्षिक निहितार्थ का वर्णन
- शिक्षण प्रतिमान का अर्थ | शिक्षण प्रतिमान की विशेषतायें | शिक्षण प्रतिमान की संकल्पना
- शिक्षण प्रतिमान के प्रकार | शिक्षण प्रतिमान के विभिन्न प्रकारों का वर्णन कीजिये
- शिक्षण प्रतिमान के आधारभूत तत्व | शिक्षण प्रतिमान के आधारभूत तत्वों का वर्णन

- 11 शिक्षण सूत्र | शिक्षण के सूत्र | शिक्षण सूत्र का अर्थ | Maxim's of Teaching in Hindi
- शिक्षण विधि का अर्थ एवं परिभाषा | शिक्षण विधि के विभिन्न प्रकार
- परस्पर अन्तःक्रिया प्रतिमान सिद्धान्त |परस्पर अन्तःक्रिया प्रतिमान की विशेषतायें
- पाठ योजना निर्माण के विभिन्न उपागम | पाठ योजना निर्माण के विभिन्न उपागमों का वर्णन कीजिये।
- 13 आदर्श पाठ योजना की विशेषतायें | आदर्श पाठ योजना की विशेषतायें बताइये
- पाठ योजना की आवश्यकता व महत्व | पाठ योजना का अर्थ | Need and importance of lesson planning in Hindi | Meaning of lesson plan in Hindi
- पाठ योजना के निर्माण में क्या सावधानी रखनी चाहिये | What precautions should be taken in the preparation of lesson plans in Hindi
- इकाई पाठ योजना का निर्माण | इकाई पाठ योजना के पद | इकाई पद्धति के गुण | इकाई पद्धति के दोष
- अभिप्रेरणा क्या है? | अभिप्रेरणा का अर्थ एवं परिभाषा | अभिप्रेरणा का शैक्षिक महत्व
- हरबर्ट की पंचपदी प्रणाली के गुण | हरबर्ट की पंचपदी प्रणाली के दोष
- डाल्टन योजना का अर्थ | डाल्टन योजना के उदेश्य | डाल्टन योजना के सिद्धान्त
- अभिप्रेरणा के प्रकार बताइए | Type of motivation in Hindi
- अभिप्रेरणा के प्रमुख स्रोतों का वर्णन कीजिए | Description of the main sources of motivation
- सूचना एवं संचार तकनीकी का अर्थ | आई.सी.टी. के शैक्षिक महत्व का वर्णन
- बालकों को अभिप्रेरित करने वाली प्रमुख विधियाँ | बालकों को अभिप्रेरित करने वाली प्रमुख विधियों का वर्णन कीजिये।
- परम्परागत और आधुनिक संचार प्रौद्योगिकी का वर्गीकरण | Classification of traditional and modern communication technology in Hindi
- अधिगम अन्तरण के विभिन्न सिद्धान्त | अधिगम अन्तरण के विभिन्न सिद्धान्तों की व्याख्या कीजिए।
- सीखने के स्थानान्तरण का महत्व | अन्तरण की विभिन्न दशाएँ
- अधिगम अन्तरण क्या है? / सीखने का स्थानान्तरण क्या है? | अधिगम अन्तरण के विभिन्न प्रकार
- अभिक्रमित अधिगम का अर्थ एवं परिभाषा | अभिक्रमित अधिगम के विभिन्न प्रकार
- शाखीय अभिक्रमित अनुदेशन क्या है | शाखीय अभिक्रम के सिद्धान्त | शाखीय अभिक्रम की अवधारणाएं
- फ्लैण्डर्स के शिक्षण प्रतिमान के दस पदों का स्पष्टीकरण | Ten terms of Flanders' teaching paradigm

sarkariguider.com